

समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics)

M.A. Economics (Semester I) — सम्पूर्ण प्रश्न एवं विस्तृत उत्तर संग्रह

पाठ्यक्रम: Macroeconomic Analysis | प्रश्नोत्तर एवं विश्लेषणात्मक उत्तर

इकाई 1: समष्टि अर्थशास्त्र की मूल अवधारणाएं एवं राष्ट्रीय आय (National Income & Basic Concepts)

Q1. समष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए तथा इसके विषय क्षेत्र, महत्व एवं सीमाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अर्थ एवं परिभाषा: समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics) अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर कुल आर्थिक चरों का अध्ययन करती है। प्रो. बोल्लिंग के अनुसार, "समष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत आय का नहीं बल्कि राष्ट्रीय आय का, व्यक्तिगत कीमतों का नहीं बल्कि सामान्य कीमत स्तर का और व्यक्तिगत उत्पादन का नहीं बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन का अध्ययन करता है।"

2. विषय क्षेत्र (Scope):

- राष्ट्रीय आय का सिद्धांत:** राष्ट्रीय आय की अवधारणाएं, मापन की विधियां और चक्रीय प्रवाह का अध्ययन।
- रोजगार एवं आय का सिद्धांत:** कुल मांग, कुल पूर्ति, प्रभावी मांग तथा बेरोजगारी के कारणों का विश्लेषण।
- मुद्रा एवं बैंकिंग:** मुद्रा की पूर्ति, साख सृजन, केंद्रीय बैंक की नीतियां और ब्याज दर निर्धारण।
- आर्थिक समृद्धि एवं विकास:** दीर्घकालिक विकास मॉडल (हैरड-डोमर, सोलो मॉडल)।

3. महत्व (Importance): अर्थव्यवस्था की समग्र कार्यप्रणाली को समझने, सरकारी आर्थिक / राजकोषीय नीतियां बनाने तथा मुद्रास्फीति व मंदी के नियंत्रण में अत्यंत सहायक है।

4. सीमाएं (Limitations): समष्टिगत विरोधाभास (Macro Paradoxes) की संभावना रहती है— जो बात एक व्यक्ति के लिए सही है (जैसे बचत करना), वह संपूर्ण समाज के लिए हानिकारक हो सकती है।

Q2. स्टॉक (Stock) और प्रवाह (Flow) चरों की अवधारणा को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए तथा समष्टि अर्थशास्त्र में इनके महत्व की विवेचना कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. स्टॉक चर (Stock Variable): स्टॉक चर वे आर्थिक चर हैं जिन्हें समय के एक निश्चित बिंदु (Point of Time) पर मापा जाता है। इसमें समय की कोई समयावधि नहीं होती।

उदाहरण: 1 जनवरी 2026 को किसी बैंक खाते में जमा राशि, देश में कुल पूंजीगत स्टॉक, कुल धन की आपूर्ति, या किसी देश की कुल जनसंख्या।

2. प्रवाह चर (Flow Variable): प्रवाह चर वे हैं जिन्हें समय की एक विशिष्ट अवधि (Period of Time) के संदर्भ में मापा जाता है, जैसे— प्रति घंटा, प्रति माह या प्रति वर्ष।

उदाहरण: प्रति माह प्राप्त होने वाली आय, वार्षिक निवेश, मासिक उपभोग व्यय, प्रति वर्ष उत्पादन की मात्रा या जन्म दर।

3. दोनों के बीच संबंध: स्टॉक और प्रवाह परस्पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, एक जलाशय (पानी का तालाब) स्टॉक है, जबकि उसमें बहकर आने वाला या निकलने वाला पानी प्रवाह है। इसी प्रकार, वार्षिक बचत (प्रवाह) व्यक्ति की कुल संपत्ति/पूंजी (स्टॉक) में वृद्धि करती है।

4. समष्टिगत महत्व: समष्टिगत मॉडल (जैसे IS-LM मॉडल या विकास मॉडल) को सही ढंग से समझने के लिए स्टॉक और प्रवाह के अंतर को स्पष्ट रखना अनिवार्य है।

Q3. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में विस्तृत अंतर स्पष्ट कीजिए। इन्हें मापने की प्रमुख विधियों की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. GDP बनाम GNP:

- **GDP (सकल घरेलू उत्पाद):** यह एक वित्तीय वर्ष में देश की भौगोलिक / राजनीतिक सीमाओं के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य है। इसमें केवल घरेलू सीमा का ध्यान रखा जाता है।
- **GNP (सकल राष्ट्रीय उत्पाद):** यह देश के सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं का कुल मूल्य है, चाहे वे देश के भीतर कार्यरत हों या विदेश में।

$$GNP = GDP + \text{विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA)}$$

2. राष्ट्रीय आय मापने की विधियां:

- **उत्पादन या मूल्य संवर्धित विधि (Product/Value Added Method):** इसमें अर्थव्यवस्था के सभी प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों द्वारा मूल्य में किए गए कुल योग (Value Addition) को जोड़ा जाता है।
- **आय विधि (Income Method):** उत्पादन के साधनों को प्राप्त आयों— लगान, मजदूरी/वेतन, ब्याज और लाभ का योग किया जाता है।
- **व्यय विधि (Expenditure Method):** कुल अंतिम व्यय को जोड़ा जाता है: $Y = C + I + G + (X - M)$

Q4. साधन लागत (Factor Cost), बाजार मूल्य (Market Price) तथा शुद्ध अप्रत्यक्ष करों के संबंध को उदाहरण सहित विस्तार से समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

1. साधन लागत (Factor Cost - FC): यह उत्पादन के साधनों (भूमि, श्रम, पूंजी, साहसी) को उनकी सेवाओं के बदले फर्मों द्वारा दिए गए कुल भुगतान का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें लगान, मजदूरी, ब्याज और सामान्य लाभ शामिल हैं। इसमें कोई सरकारी कर या सब्सिडी शामिल नहीं होती।

2. बाजार मूल्य (Market Price - MP): यह वह वास्तविक मूल्य है जिस पर वस्तुएं और सेवाएं बाजार में उपभोक्ताओं को बेची जाती हैं। इसमें सरकार द्वारा लगाए गए अप्रत्यक्ष कर (जैसे GST) जुड़े होते हैं और सब्सिडी घटी होती है।

3. शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Taxes - NIT): अप्रत्यक्ष करों (Indirect Taxes) और सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता (Subsidies) के अंतर को शुद्ध अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।

$$\text{शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)} = \text{अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)} - \text{सब्सिडी (Subsidies)}$$

$$\text{Market Price (MP)} = \text{Factor Cost (FC)} + \text{NIT}$$

$$\text{Factor Cost (FC)} = \text{Market Price (MP)} - \text{NIT}$$

उदाहरण: यदि किसी कार की साधन लागत ₹5,00,000 है, उस पर ₹1,00,000 GST लगता है और ₹20,000 की सब्सिडी मिलती है, तो उसका बाजार मूल्य ₹5,80,000 होगा।

**Q5. वास्तविक जीडीपी (Real GDP) एवं नाममात्र जीडीपी (Nominal GDP) के अंतर को विश्लेषित कीजिए।
जीडीपी अवस्फीतिकारक (GDP Deflator) के उपयोग की व्याख्या कीजिए।**

विस्तृत उत्तर:

- 1. Nominal GDP (नाममात्र जीडीपी):** जब किसी वर्ष के कुल उत्पादन का मूल्यांकन उसी वर्ष की प्रचलित बाजार कीमतों (Current Prices) पर किया जाता है, तो उसे नाममात्र जीडीपी कहते हैं। इसमें उत्पादन में वास्तविक वृद्धि के बिना भी केवल कीमतों बढ़ने से जीडीपी बढ़ी हुई दिख सकती है।
- 2. Real GDP (वास्तविक जीडीपी):** जब किसी वर्ष के भौतिक उत्पादन का मूल्यांकन एक स्थिर आधार वर्ष (Base Year) की कीमतों पर किया जाता है, तो उसे वास्तविक जीडीपी कहते हैं। यह अर्थव्यवस्था के वास्तविक भौतिक उत्पादन और आर्थिक कल्याण का सही सूचक है।
- 3. GDP Deflator (जीडीपी अवस्फीतिकारक):** यह एक व्यापक मूल्य सूचकांक है जो अर्थव्यवस्था में समग्र मूल्य स्तर में होने वाले परिवर्तन को मापता है।

$$GDP\ Deflator = (Nominal\ GDP / Real\ GDP) \times 100$$

महत्व: CPI (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) की तुलना में GDP Deflator अधिक व्यापक है क्योंकि इसमें अर्थव्यवस्था में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों में बदलाव शामिल होता है।

Q6. चार-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था (Four-Sector Economy) में आय के चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income) का सचित्र एवं विस्तृत वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

चार-क्षेत्रीय खुले मॉडल में निम्नलिखित चार क्षेत्र शामिल होते हैं: 1. पारिवारिक क्षेत्र (Household), 2. व्यावसायिक क्षेत्र (Firm), 3. सरकारी क्षेत्र (Government), और 4. विदेशी क्षेत्र (Rest of the World)।

आय एवं व्यय का चक्रीय प्रवाह:

- **परिवार और फर्म:** परिवार फर्मों को साधन सेवाएं प्रदान करते हैं और साधन आय (मजदूरी, लगान, ब्याज) प्राप्त करते हैं। यह आय फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को खरीदने पर व्यय होती है।
- **वित्तीय बाजार (Financial Market):** परिवारों की बचत (Savings) वित्तीय बाजार में जाती है, जहां से फर्म निवेश (Investment) हेतु ऋण लेती हैं।
- **सरकारी क्षेत्र (Government):** सरकार परिवारों व फर्मों पर कर (Taxes) लगाती है (आय की निकासी) और हस्तांतरण भुगतान व सार्वजनिक व्यय करती है (आय का अंतःक्षेपण)।
- **विदेशी क्षेत्र (Rest of the World):** निर्यात (Exports) से देश में आय का प्रवेश होता है (Inflow), जबकि आयात (Imports) के कारण आय बाहर जाती है (Outflow)।

संतुलन शर्त: $S + T + M = I + G + X$ (बचत + कर + आयात = निवेश + सरकारी व्यय + निर्यात)

Q7. मध्यवर्ती वस्तुओं और अंतिम वस्तुओं के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। दोहरी गणना (Double Counting) की समस्या क्या है और इससे कैसे बचा जा सकता है?

विस्तृत उत्तर:

1. मध्यवर्ती बनाम अंतिम वस्तुएं:

- **अंतिम वस्तुएं (Final Goods):** वे वस्तुएं जो उत्पादन की सीमा रेखा को पार कर चुकी हैं और अंतिम उपभोग या पूंजी निर्माण (निवेश) के लिए तैयार हैं। उदाहरण: घर में उपयोग की जाने वाली डबलरोटी, या कार।
- **मध्यवर्ती वस्तुएं (Intermediate Goods):** वे वस्तुएं जिन्हें अन्य वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में या पुनः बिक्री के लिए उपयोग किया जाता है। उदाहरण: बेकरी द्वारा खरीदा गया आटा या रुई।

2. दोहरी गणना की समस्या (Problem of Double Counting): राष्ट्रीय आय की गणना करते समय जब मध्यवर्ती वस्तु के मूल्य को अंतिम वस्तु के मूल्य के साथ बार-बार जोड़ लिया जाता है, तो उसे दोहरी गणना की समस्या कहते हैं। इससे राष्ट्रीय आय का मूल्य वास्तविक उत्पादन से बहुत अधिक दिखाई देने लगता है।

3. समाधान/बचाव के उपाय:

- **मूल्य संवर्धित विधि (Value Added Method):** उत्पादन के प्रत्येक चरण पर केवल मूल्य में की गई शुद्ध वृद्धि (Value Addition) को ही जोड़ा जाए।
- केवल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य की गणना की जाए।

Q8. स्थिर पूंजी का उपभोग (Depreciation / Consumption of Fixed Capital) क्या है? इसके मुख्य कारणों एवं राष्ट्रीय आय में इसकी भूमिका का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अर्थ: उत्पादन प्रक्रिया में स्थिर परिसंपत्तियों (जैसे मशीनों, भवनों, उपकरणों) के निरंतर उपयोग से उनके मूल्य में होने वाली वार्षिक घिसावट या क्षति को मूल्यहास या 'स्थिर पूंजी का उपभोग' (Depreciation) कहते हैं।

2. मूल्यहास के मुख्य कारण:

- **सामान्य टूट-फूट (Normal Wear and Tear):** मशीनों के निरंतर संचालन से होने वाला हास।
- **अकस्मात क्षति (Accidental Damage):** उत्पादन के दौरान मशीनों में छोटी-मोटी दुर्घटनाएं।
- **प्रत्याशित अप्रचलन (Expected Obsolescence):** तकनीक में सुधार या बाजार मांग में बदलाव के कारण पुरानी मशीनों का मूल्य कम हो जाना।

3. राष्ट्रीय आय में भूमिका:

सकल मान (Gross Concept) से मूल्यहास घटाने पर शुद्ध मान (Net Concept) प्राप्त होता है।

$$\text{Net National Product (NNP)} = \text{Gross National Product (GNP)} - \text{Depreciation}$$

यह देश की वास्तविक पूंजी निर्माण दर (Net Capital Formation) का आकलन करने हेतु अनिवार्य है।

Q9. हरित लेखांकन (Green GDP) की अवधारणा का विस्तृत परीक्षण कीजिए। पारंपरिक जीडीपी की तुलना में यह क्यों श्रेष्ठ मानी जाती है?

विस्तृत उत्तर:

1. ग्रीन जीडीपी की अवधारणा: हरित जीडीपी राष्ट्रीय आय लेखांकन का वह आधुनिक दृष्टिकोण है जो आर्थिक वृद्धि दर को मापने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास को भी ध्यान में रखता है।

Green GDP = Traditional GDP - (प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण + पर्यावरणीय क्षति लागत)

2. पारंपरिक जीडीपी की सीमाएं: पारंपरिक जीडीपी केवल भौतिक उत्पादन और सेवाओं के मूल्य को जोड़ती है। यह जंगलों की कटाई, नदियों के प्रदूषण, वायु गुणवत्ता में गिरावट और खनिज संसाधनों के समाप्त होने जैसी क्षति को नकारात्मक मद के रूप में दर्ज नहीं करती।

3. ग्रीन जीडीपी की श्रेष्ठता:

- यह 'सतत विकास' (Sustainable Development) का वास्तविक और सटीक सूचक है।
- यह भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु नीतियां बनाने में मदद करती है।
- यह दर्शाती है कि आर्थिक वृद्धि पर्यावरण की कीमत पर तो प्राप्त नहीं की जा रही है।

Q10. राष्ट्रीय आय लेखांकन की प्रमुख व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक कठिनाइयों का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

विकासशील देशों (जैसे भारत) में राष्ट्रीय आय की सटीक गणना करने में कई चुनौतियां आती हैं:

1. सैद्धांतिक कठिनाइयां (Conceptual Difficulties):

- **गैर-मौद्रिक क्षेत्र (Non-monetized Sector):** ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी वस्तु विनिमय (Barter System) का उपयोग होता है, जिसे आय में शामिल करना कठिन है।
- **अवैतनिक सेवाएं:** गृहणियों की सेवाएं, self-consumption के लिए किया गया उत्पादन आदि का बाजार मूल्य तय करना कठिन है।
- दोहरी गणना और अवैध आय (काला धन, तस्करी) की उपस्थिति।

2. व्यावहारिक कठिनाइयां (Practical Difficulties):

- **विश्वसनीय आंकड़ों का अभाव:** असंगठित क्षेत्र, छोटे किसान व हस्तशिल्पी लेखा-जोखा नहीं रखते।
- **व्यावसायिक विशिष्टीकरण की कमी:** कई लोग एक साथ कृषि, मजदूरी और व्यापार करते हैं, जिससे आय की सही श्रेणी तय करना कठिन होता है।
- मूल्यह्रास का सही आकलन करने में कठिनाई।

इकाई 2: आय एवं रोजगार का सिद्धांत (Theory of Income and Employment)

Q11. प्रतिष्ठित (Classical) रोजगार सिद्धांत की प्रमुख मान्यताओं एवं निष्कर्षों की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- परिचय:** प्रतिष्ठित रोजगार सिद्धांत (एडम स्मिथ, रिकार्डो, जे.बी. से, पीगू) का मानना है कि एक स्वतंत्र बाजार अर्थव्यवस्था में स्वतः ही पूर्ण रोजगार (Full Employment) की स्थिति पाई जाती है।
- मुख्य मान्यताएं:**
 - **अहस्तक्षेप की नीति (Laissez-faire):** सरकार का बाजार में कोई हस्तक्षेप नहीं होता।
 - कीमतों और मजदूरी में पूर्ण लोचशीलता (Wage-Price Flexibility)।
 - से का बाजार नियम क्रियाशील रहता है।
 - मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम है (Money is neutral)।
- सिद्धांत का निष्कर्ष:** प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के अनुसार, अर्थव्यवस्था में यदि कभी अल्पकालिक बेरोजगारी उत्पन्न भी होती है, तो मजदूरी में कटौती (Wage Cut) के माध्यम से श्रम की मांग और पूर्ति में स्वतः संतुलन स्थापित हो जाता है और पुनः पूर्ण रोजगार प्राप्त हो जाता है।

Q12. से के बाजार नियम (Say's Law of Markets) की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए। कीन्स ने इसे क्यों खारिज किया?

विस्तृत उत्तर:

- जे.बी. से का नियम:** "पूर्ति अपनी मांग स्वयं सृजित करती है" (Supply creates its own demand)। उत्पादकों द्वारा वस्तुओं के उत्पादन से जो साधन आय (मजदूरी, लगान) उत्पन्न होती है, वह पूरी तरह से वस्तुओं को खरीदने पर खर्च हो जाती है। अतः सामान्य अति-उत्पादन या सामान्य बेरोजगारी असंभव है।
- कीन्स द्वारा आलोचना व खंडन (1929 की महामंदी के संदर्भ में):**
 - **बचत और निवेश में असमानता:** कीन्स ने कहा कि आय का वह भाग जो बचा लिया जाता है, यदि वह पूरी तरह से निवेश न हो, तो कुल मांग में कमी आ जाएगी और अति-उत्पादन होगा।
 - **मुद्रा का संचय (Store of Value):** मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम नहीं है, लोग इसे परिसंपत्ति के रूप में संचित भी करते हैं।
 - **मजदूरी कटौती समाधान नहीं:** मजदूरी में कटौती करने से श्रमिकों की क्रय शक्ति घटती है, जिससे कुल मांग और गिर जाती है।

Q13. कीन्स के प्रभावी मांग (Effective Demand) के सिद्धांत की सचित्र एवं विस्तृत व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- अर्थ:** कीन्स के रोजगार सिद्धांत का केंद्रीय बिंदु 'प्रभावी मांग' है। प्रभावी मांग कुल मांग (Aggregate Demand) का वह स्तर है जहां कुल मांग मूल्य (ADF) और कुल पूर्ति मूल्य (ASF) आपस में बराबर होते हैं।
- दो मुख्य घटक:**
 - **कुल पूर्ति फलन (Aggregate Supply Function - ASF):** यह उत्पादन की विभिन्न मात्राओं को बाजार में लाने के लिए उत्पादकों द्वारा अपेक्षित न्यूनतम आवश्यक प्राप्तियों को दर्शाता है।
 - **कुल मांग फलन (Aggregate Demand Function - ADF):** यह दर्शाती है कि समाज उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर बनी वस्तुओं को खरीदने हेतु कितना व्यय करने को तैयार है ($AD = C + I + G$)।
- संतुलन का निर्धारण:** जिस बिंदु पर $ADF = ASF$ होता है, वहीं प्रभावी मांग निर्धारित होती है। यदि कुल मांग कम रह जाती है, तो अर्थव्यवस्था में अल्प-रोजगार संतुलन (Under-employment Equilibrium) स्थापित होता है, जिसे सरकारी व्यय (G) बढ़ाकर दूर किया जा सकता है।

Q14. उपभोग फलन (Consumption Function) की अवधारणा को समझाइए। औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) तथा सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. **उपभोग फलन:** उपभोग व्यय (C) और आय के स्तर (Y) के बीच पाए जाने वाले संबंध को उपभोग फलन कहते हैं $C = f(Y)$ या रेखीय रूप में $C = a + bY$ (जहां a स्वायत्त उपभोग है तथा b सीमांत उपभोग प्रवृत्ति है)।

2. **APC एवं MPC में अंतर:**

- **औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC):** कुल उपभोग व्यय और कुल आय का अनुपात। $APC = C/Y$
- **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC):** आय में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उपभोग में होने वाले परिवर्तन का अनुपात। $MPC = \Delta C / \Delta Y$

गुणधर्म: सामान्यतः MPC का मान 0 से अधिक तथा 1 से कम होता है ($0 < MPC < 1$)। जैसे-जैसे आय बढ़ती है, APC और MPC दोनों घटते हैं, लेकिन MPC, APC की तुलना में अधिक तीव्र गति से घटता है।

Q15. कीन्स के मनोवैज्ञानिक उपभोग नियम (Psychological Law of Consumption) के मुख्य प्रस्तावों एवं व्यावहारिक निहितार्थों का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. **नियम का मूल कथन:** कीन्स के अनुसार, "मानव स्वभाव का यह एक मौलिक मनोवैज्ञानिक नियम है कि जब आय बढ़ती है, तो उपभोग भी बढ़ता है, लेकिन आय में होने वाली वृद्धि की तुलना में उपभोग में वृद्धि कम अनुपात में होती है।"

2. **तीन मुख्य आधारभूत प्रस्ताव (Propositions):**

- जब आय बढ़ती है, तो उपभोग व्यय भी बढ़ता है परंतु कम मात्रा में ($\Delta C < \Delta Y$)।
- बढ़ी हुई आय दो भागों— उपभोग और बचत— में विभाजित हो जाती है ($\Delta Y = \Delta C + \Delta S$)।
- आय में वृद्धि होने पर उपभोग और बचत दोनों में वृद्धि होती है।

3. **निहितार्थ:** यह नियम बताता है कि अर्थव्यवस्था में केवल उपभोग बढ़ाकर पूर्ण रोजगार नहीं पाया जा सकता, क्योंकि बचत और निवेश का अंतर (Demand Gap) बढ़ता जाता है। अतः सरकारी निवेश अनिवार्य हो जाता है।

Q16. निवेश गुणक (Investment Multiplier) की कार्यप्रणाली को एक काल्पनिक सारणी एवं सूत्र द्वारा विस्तार से समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

1. **अर्थ:** गुणक (K) यह दर्शाता है कि प्रारम्भिक स्वायत्त निवेश में होने वाले परिवर्तन के कारण कुल राष्ट्रीय आय में कितने गुना परिवर्तन होता है।

$$K = \Delta Y / \Delta I = 1 / (1 - MPC) = 1 / MPS$$

2. **गुणक की कार्यप्रणाली (उदाहरण):** मान लीजिए अर्थव्यवस्था में ₹100 करोड़ का नया स्वायत्त निवेश (ΔI) किया जाता है और सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.8 (या 80%) है।

- **प्रथम चरण:** ₹100 करोड़ का निवेश उत्पादन के साधनों के लिए ₹100 करोड़ की नई आय (ΔY_1) बनाता है।
- **द्वितीय चरण:** लोग इसका 80% यानी ₹80 करोड़ उपभोग पर खर्च करते हैं, जो अन्य लोगों की ₹80 करोड़ आय बनाता है।
- **तृतीय चरण:** वे ₹80 करोड़ का 80% यानी ₹64 करोड़ उपभोग पर व्यय करते हैं।

यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक कुल आय में वृद्धि $\Delta Y = 100 \times [1 / (1 - 0.8)] = 100 \times 5 = ₹500$ करोड़ न हो जाए।

Q17. त्वरक सिद्धांत (Accelerator Theory) क्या है? गुणक और त्वरक की पारस्परिक क्रिया (Super Multiplier) को स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. त्वरक सिद्धांत: त्वरक यह दर्शाता है कि उपभोग मांग में परिवर्तन होने के कारण प्रेरित निवेश (Induced Investment) में कितना परिवर्तन होता है। जे. एम. क्लार्क द्वारा विकसित इस सिद्धांत का सूत्र है: $v = \Delta I / \Delta C$

2. सुपर मल्टीप्लायर (Super Multiplier / Multiplier-Accelerator Interaction): प्रो. सैम्युअल्सन ने गुणक और त्वरक के संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण किया।

- प्रारम्भिक निवेश से गुणक क्रिया द्वारा आय और उपभोग बढ़ता है।
- उपभोग में हुई यह वृद्धि त्वरक क्रिया द्वारा प्रेरित निवेश को बढ़ाती है।
- यह प्रेरित निवेश पुनः गुणक के माध्यम से आय को और अधिक बढ़ा देता है।

इस दोहरे संयुक्त प्रभाव के कारण राष्ट्रीय आय में अत्यधिक तीव्र वृद्धि या कमी होती है, जो व्यापार चक्रों (Trade Cycles) का मुख्य कारण है।

Q18. मितव्ययिता के विरोधाभास (Paradox of Thrift) को रेखाचित्र की सहायता से समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

1. अवधारणा: कीन्स के अनुसार, यदि समाज के सभी व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अधिक बचत (मितव्ययिता) करने का प्रयास करते हैं, तो कुल मिलाकर समाज की वास्तविक बचत बढ़ने के बजाय घट जाती है या स्थिर रहती है। इसे मितव्ययिता का विरोधाभास कहते हैं।

2. प्रक्रिया:

- जब लोग बचत का अनुपात बढ़ाते हैं (MPS बढ़ता है), तो उपभोग व्यय (C) घट जाता है।
- उपभोग घटने से उत्पादकों की बिक्री घटती है और कुल मांग (AD) नीचे गिर जाती है।
- कुल मांग गिरने से राष्ट्रीय उत्पादन, रोजगार और आय (Y) में गिरावट आ जाती है।
- आय का स्तर घटने के कारण अंततः कुल बचत ($S = s \times Y$) घटकर वापस पुरानी स्थिति पर आ जाती है।

निष्कर्ष: व्यक्तिगत स्तर पर बचत एक गुण है, परंतु मंदी के समय समष्टिगत स्तर पर अत्यधिक बचत एक सामाजिक अभिशाप बन जाती है।

Q19. कीन्सवादी मॉडल में अल्प-रोजगार संतुलन (Under-employment Equilibrium) तथा अभावी मांग की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अल्प-रोजगार संतुलन: प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के विपरीत, कीन्स का मानना था कि यह आवश्यक नहीं है कि कुल मांग और कुल पूर्ति का संतुलन हमेशा पूर्ण रोजगार स्तर पर ही हो। अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार के स्तर से नीचे भी संतुलित हो सकती है। इसे अल्प-रोजगार संतुलन कहते हैं।

2. अभावी मांग (Deficient Demand): जब कुल मांग (AD), पूर्ण रोजगार को बनाए रखने के लिए आवश्यक कुल पूर्ति (AS) से कम होती है, तो उसे अभावी मांग या 'अवस्फीतिकारी अंतराल' (Deflationary Gap) कहते हैं।

3. परिणाम एवं निवारण: अभावी मांग के कारण अनैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary Unemployment) फैलती है और कारखानों में अप्रयुक्त क्षमता रह जाती है। इसे दूर करने के लिए कीन्स ने घाटे की वित्त व्यवस्था (Deficit Financing) और सरकारी व्यय में वृद्धि की सिफारिश की।

Q20. नियोजित बचत व निवेश (Ex-ante) तथा वास्तविक बचत व निवेश (Ex-post) के अंतर एवं उनके संतुलन को स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. Ex-ante (नियोजित / सुलभ): Ex-ante से तात्पर्य उस राशि से है जिसे अर्थव्यवस्था में गृहस्थ और फर्म किसी वर्ष की शुरुआत में योजना बनाते हैं (Planned/Intended)।

- **Ex-ante Saving:** लोगों द्वारा नियोजित बचत।
- **Ex-ante Investment:** निवेशकों द्वारा नियोजित निवेश।

संतुलन तब होता है जब $Ex-ante S = Ex-ante I$ । यदि $Ex-ante I > Ex-ante S$, तो आय बढ़ती है।

2. Ex-post (वास्तविक / पश्च): Ex-post से तात्पर्य वर्ष के अंत में प्राप्त वास्तविक या यथार्थ आंकड़ों से है। राष्ट्रीय आय लेखांकन की दृष्टि से, वास्तविक बचत और वास्तविक निवेश हमेशा एक-दूसरे के बराबर होते हैं ($Ex-post S = Ex-post I$), क्योंकि अनियोजित स्टॉक (Unplanned Inventory Change) समायोजन कर देता है।

इकाई 3: उपभोग एवं निवेश सिद्धांत (Advanced Consumption & Investment Theories)

Q21. जेम्स ड्यूसेनबरी की सापेक्ष आय परिकल्पना (Relative Income Hypothesis) एवं प्रदर्शन प्रभाव (Demonstration Effect) का मूल्यांकन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. मूल सिद्धांत: 1949 में जेम्स ड्यूसेनबरी ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि किसी व्यक्ति का उपभोग उसकी अपनी निरपेक्ष आय पर निर्भर नहीं करता, बल्कि दो मुख्य सामाजिक व मनोवैज्ञानिक घटकों पर निर्भर करता है:

2. दो मुख्य घटक:

- **प्रदर्शन प्रभाव (Demonstration Effect):** लोग अपने जीवन स्तर को स्वयं से उच्च आय वाले पड़ोसियों या समाज के धनी वर्गों के उपभोग पैटर्न के समान बनाने की कोशिश करते हैं। इससे कम आय वाले लोगों का उपभोग अनुपात उच्च बना रहता है।
- **रैचेट प्रभाव (Ratchet Effect):** जब किसी व्यक्ति की आय घटती है, तो वह अपना उपभोग वही अनुपात में नहीं घटा पाता, क्योंकि वह अपने पुराने उच्चतम जीवन स्तर को आसानी से छोड़ने को तैयार नहीं होता। उपभोग वक्र नीचे की ओर आसानी से सरकता नहीं है।

Q22. मिलटन फ्रीडमैन की स्थायी आय परिकल्पना (Permanent Income Hypothesis) की विस्तृत विवेचना कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अवधारणा: 1957 में नोबेल पुरस्कार विजेता मिलटन फ्रीडमैन ने प्रतिपादित किया कि उपभोग वर्तमान चालू आय का फलन नहीं है, बल्कि 'स्थायी आय' (Permanent Income) का फलन है।

2. आय एवं उपभोग का विभाजन:

- **आय (Y):** $Y = Y_p + Y_t$ (जहां Y_p स्थायी आय है और Y_t अस्थायी/आकस्मिक आय है, जैसे लॉटरी)।
- **उपभोग (C):** $C = C_p + C_t$ (जहां C_p स्थायी उपभोग है और C_t अस्थायी उपभोग है)।

3. निष्कर्ष: फ्रीडमैन के अनुसार $C_p = k \cdot Y_p$ । लोग केवल अपनी स्थायी आय (जो उनकी संपत्ति, शिक्षा और दीर्घकालिक अर्जन क्षमता पर निर्भर करती है) के आधार पर उपभोग तय करते हैं। अस्थायी आय (Y_t) को उपभोग में न खर्च करके बचा लिया जाता है।

Q23. फ्रेंको मोदिग्लियानी की जीवन चक्र परिकल्पना (Life Cycle Hypothesis) का सचित्र विश्लेषण कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. मूल विचार: मोदिग्लियानी, एंडो और ब्रमबर्ग द्वारा विकसित यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्ति अपनी संपूर्ण जीवन अवधि में प्राप्त होने वाली कुल प्रत्याशित आय और परिसंपत्तियों के आधार पर अपने उपभोग का इस प्रकार नियोजन करता है कि उसका उपभोग स्तर जीवन भर स्थिर (Smooth) बना रहे।

2. जीवन की तीन अवस्थाएं:

- **युवावस्था (Early Life):** आय कम या शून्य होती है, अतः व्यक्ति उपभोग के लिए ऋण लेता है (Dissaving)।
- **कार्यशील अवस्था (Working Age):** आय उच्च होती है। व्यक्ति पुराना ऋण चुकाता है और सेवानिवृत्ति के लिए बचत (Saving) करता है।
- **सेवानिवृत्ति (Retirement):** आय पुनः गिर जाती है। व्यक्ति अपनी संचित बचत से उपभोग व्यय पूरा करता है (Dissaving)।

निष्कर्ष: अर्थव्यवस्था की कुल बचत दर केवल आय पर नहीं, बल्कि जनसंख्या की आयु संरचना पर निर्भर करती है।

Q24. पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC) की अवधारणा तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. परिभाषा: पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC) पूंजीगत परिसंपत्ति (मशीन) की एक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली प्रत्याशित लाभप्रदता दर या प्रतिफल दर (Expected Rate of Return) है।

2. दो मुख्य निर्धारक घटक:

- **पूर्ति मूल्य (Supply Price):** नई मशीन या पूंजीगत परिसंपत्ति को खरीदने या पुनरुत्पादित करने की कुल लागत।
- **प्रत्याशित उपज (Prospective Yield):** मशीन के जीवन काल के दौरान उससे प्राप्त होने वाले शुद्ध वार्षिक आय प्रवाह का अनुमान।

3. प्रभावित करने वाले कारक: बाजार मांग में भावी बदलाव, तकनीकी प्रगति, निवेशकों की प्रत्याशाएं (Business Expectations), कर नीतियां और राजनैतिक स्थिरता।

Q25. निवेश निर्णय में ब्याज दर (r) तथा MEC की तुलनात्मक भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

निवेशक कोई भी नया पूंजीगत निवेश करते समय पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC) की तुलना प्रचलित बाजार ब्याज दर (r) से करते हैं:

1. परिस्थितियां:

- यदि $MEC > r$: निवेश अत्यधिक लाभदायक होगा। निवेशक नया निवेश करेंगे, जिससे कुल निवेश बढ़ता है।
- यदि $MEC < r$: निवेश में हानि होगी। निवेशक नया निवेश करने के बजाय धन को बैंक में जमा रखना पसंद करेंगे।
- यदि $MEC = r$: यह संतुलन की स्थिति है जहां तक निवेशक नया निवेश करते हैं।

2. कीन्स का निष्कर्ष: अल्पकाल में ब्याज दर (r) प्रायः स्थिर रहती है, अतः निवेश में उतार-चढ़ाव मुख्य रूप से MEC (निवेशकों के व्यापारिक विश्वास) में होने वाले परिवर्तनों के कारण आते हैं।

Q26. निवेश की सीमांत क्षमता (MEI) तथा पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC) के मध्य सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. MEC (Marginal Efficiency of Capital):

- यह दी गई पूंजी स्टॉक की स्थिति पर आधारित प्रत्याशित प्रतिफल दर है।
- यह मानती है कि पूंजीगत वस्तुओं के पूर्ति मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होता।
- यह स्टॉक अवधारणा से संबंधित है।

2. MEI (Marginal Efficiency of Investment):

- यह समय की प्रति इकाई शुद्ध निवेश की दर से संबंधित है (प्रवाह चर)।
- यह इस तथ्य को ध्यान में रखती है कि जब अर्थव्यवस्था में एक साथ बड़े पैमाने पर निवेश बढ़ता है, तो पूंजीगत मशीनों की मांग बढ़ने से उनका पूर्ति मूल्य (लागत) बढ़ जाता है।
- अतः MEI वक्र, MEC वक्र की तुलना में अधिक लोचदार (Flatter) होता है।

Q27. जेम्स टोबिन के q-सिद्धांत (Tobin's q Theory of Investment) की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. परिचय: जेम्स टोबिन (1969) ने निवेश व्यय का संबंध वित्तीय बाजारों (शेयर बाजार) से स्थापित किया।

2. 'q' अनुपात की परिभाषा:

$$q = (\text{फर्म का कुल बाजार मूल्य}) / (\text{फर्म की पूंजी पुनरुत्पादन लागत})$$

- अंश (Numerator): शेयर बाजार द्वारा फर्म की परिसंपत्तियों का लगाया गया कुल मूल्यांकन।
- हर (Denominator): उस जैसी नई पूंजीगत परिसंपत्ति को वर्तमान में स्थापित करने की वास्तविक लागत (Replacement Cost)।

3. निवेश निर्णय:

- यदि $q > 1$: शेयर बाजार में फर्म का मूल्य अधिक है। नई मशीन स्थापित करना सस्ता है। अतः फर्म नए शेयर जारी कर नया निवेश करेगी।
- यदि $q < 1$: नया निवेश नहीं किया जाएगा।

Q28. स्वायत्त (Autonomous) तथा प्रेरित (Induced) निवेश में विस्तृत अंतर स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment):

- वह निवेश जो आय, लाभ या ब्याज दर के स्तर में बदलाव से प्रभावित नहीं होता।
- यह वक्र आय अक्ष के समानांतर (क्षैतिज) होता है।
- यह मुख्य रूप से सरकार द्वारा लोक कल्याण हेतु किया जाता है (जैसे- सड़कें, पुल, स्कूल बनाना)।

2. प्रेरित निवेश (Induced Investment):

- वह निवेश जो आय, उत्पादन और लाभ के स्तर से सीधे तौर पर प्रभावित होता है।
- आय बढ़ने पर प्रेरित निवेश बढ़ता है; इसका वक्र धनात्मक ढलान वाला होता है।
- यह मुख्य रूप से निजी क्षेत्र के उद्यमियों द्वारा लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है।

Q29. क्राउडिंग आउट प्रभाव (Crowding Out Effect) की क्रियाविधि को विस्तार से समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

1. अवधारणा: जब सरकार अपने राजकोषीय घाटे को पूरा करने या विस्तारवादी नीति लागू करने के लिए बाजार से बड़े पैमाने पर ऋण लेती है, तो इसके कारण निजी क्षेत्र के निवेश में आने वाली कमी को 'क्राउडिंग आउट प्रभाव' कहते हैं।

2. चरणबद्ध क्रियाविधि:

- सरकार द्वारा सार्वजनिक व्यय (G) बढ़ाने के लिए बाजार से भारी मात्रा में बॉन्ड बेचकर ऋण लिया जाता है।
- ऋणयोग्य कोषों (Loanable Funds) की मांग बढ़ने से अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें (r) बढ़ जाती हैं।
- उच्च ब्याज दर के कारण निजी निवेशकों के लिए पूंजी की लागत बढ़ जाती है।
- परिणामस्वरूप, निजी फर्म अपने निवेश (I) योजनाओं को रद्द या कम कर देती हैं।

निष्कर्ष: सरकारी व्यय में वृद्धि का धनात्मक प्रभाव उच्च ब्याज दरों द्वारा निजी निवेश के घटने से आंशिक या पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

Q30. निवेश का लचीला त्वरक मॉडल (Flexible Accelerator Model of Investment) क्या है?

विस्तृत उत्तर:

1. अवधारणा: साधारण त्वरक मॉडल यह मानता था कि उपभोग में वृद्धि होते ही पूंजीगत स्टॉक में तुरंत समायोजन हो जाता है। जबकि हॉलिस चेनरी और एल. कॉयस्क द्वारा विकसित लचीला त्वरक मॉडल यह मानता है कि वांछित पूंजी स्टॉक (K^*) और वास्तविक पूंजी स्टॉक (K) के बीच का अंतर समय के साथ धीरे-धीरे (आंशिक रूप से) भरा जाता है।

2. गणितीय रूप:

$$I_t = \lambda(K^*_t - K_{t-1})$$

जहां I_t शुद्ध निवेश है, K^*_t वांछित पूंजी स्टॉक है, K_{t-1} पिछला पूंजी स्टॉक है, और λ समायोजन गुणांक है ($0 < \lambda < 1$)।

3. महत्व: यह मॉडल अधिक यथार्थवादी है क्योंकि यह मशीनों के निर्माण में लगने वाले समय (Time Lag) और वित्तीय बाधाओं को स्वीकार करता है।

इकाई 4: मुद्रा, ब्याज एवं IS-LM मॉडल (Money, Interest & IS-LM Framework)

Q31. कीन्स के तरलता अधिमान सिद्धांत (Liquidity Preference Theory) की विस्तार से समीक्षा कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. मूल सिद्धांत: कीन्स के अनुसार, ब्याज दर एक पूर्णतः मौद्रिक घटना (Monetary Phenomenon) है जो मुद्रा की मांग (तरलता पसंदगी) और मुद्रा की पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है।

2. नकदी/तरलता रखने के 3 उद्देश्य:

- **सौदा उद्देश्य (L_1):** दैनिक व्यक्तिगत व व्यावसायिक लेन-देन हेतु। $L_1 = f(Y)$ (आय का फलन)।
- **सतर्कता उद्देश्य (L_2):** भविष्य की अप्रत्याशित बीमारियों या संकटों हेतु। $L_2 = f(Y)$ ।
- **सट्टा उद्देश्य (L_3):** बॉन्ड बाजार में ब्याज दरों के उतार-चढ़ाव से लाभ कमाने हेतु। $L_3 = f(r)$ (ब्याज दर का विपरीत फलन)।

3. ब्याज निर्धारण: जहां मुद्रा की कुल मांग ($L = L_1 + L_3$) केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित कुल मुद्रा पूर्ति (M_s) के बराबर होती है, वहीं संतुलन ब्याज दर निर्धारित होती है।

Q32. तरलता जाल (Liquidity Trap) क्या है? रेखाचित्र बनाकर समझाइए कि इस स्थिति में मौद्रिक नीति क्यों विफल हो जाती है।

विस्तृत उत्तर:

1. परिभाषा: तरलता जाल कीन्सवादी अर्थशास्त्र की वह स्थिति है जिसमें ब्याज दर घटकर अपने न्यूनतम संभव स्तर पर पहुंच जाती है। इस स्तर पर सट्टा उद्देश्य हेतु मुद्रा की मांग वक्र पूर्णतः लोचदार (क्षैतिज) हो जाता है।

2. स्थिति का विश्लेषण:

- न्यूनतम ब्याज दर पर बॉन्ड की कीमतें अपने उच्चतम स्तर पर होती हैं।
- सट्टेबाजों को डर होता है कि भविष्य में ब्याज दरें केवल बढ़ सकती हैं और बॉन्ड कीमतें गिरेंगी (पूँजीगत हानि होगी)।
- अतः लोग बॉन्ड खरीदने के बजाय समस्त अतिरिक्त नकदी को अपने पास ही जमा रखना पसंद करते हैं।

3. मौद्रिक नीति की विफलता: इस स्थिति में केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में कितनी भी अतिरिक्त मुद्रा आपूर्ति (M_s) बढ़ा दे, ब्याज दर और नीचे नहीं गिरती। अतः मंदी से बाहर निकलने में मौद्रिक नीति पूर्णतः निष्प्रभावी हो जाती है।

Q33. भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा उपयोग की जाने वाली मुद्रा आपूर्ति की अवधारणाओं ($M1$, $M2$, $M3$, $M4$) की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

आरबीआई मुद्रा की आपूर्ति को मापने के लिए निम्नलिखित चार संकीर्ण एवं व्यापक मापों का प्रयोग करता है:

- **$M1$ (संकीर्ण मुद्रा - Narrow Money):** यह सबसे अधिक तरल माप है।
 $M1 = \text{जनता के पास करेंसी नोट व सिक्के} + \text{बैंकों के पास मांग जमा (Demand Deposits)} + \text{RBI के पास अन्य जमा}$
- **$M2$:** $M2 = M1 + \text{डाकघर बचत बैंकों की बचत जमाएं}$
- **$M3$ (व्यापक मुद्रा - Broad Money):** यह नीतिगत दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण माप है।
 $M3 = M1 + \text{वाणिज्यिक बैंकों की सावधि/समय जमाएं (Time Deposits / FDs)}$
- **$M4$:** $M4 = M3 + \text{डाकघर की कुल जमाएं (NSC को छोड़कर)}$

Q34. साख गुणक (Credit Multiplier) तथा वाणिज्यिक बैंकों द्वारा साख सृजन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

1. साख सृजन का मूल आधार: वाणिज्यिक बैंक अपनी प्राथमिक जमाओं (Primary Deposits) के आधार पर कई गुना अधिक व्युत्पन्न जमाएं (Derived Deposits) या ऋण प्रदान कर साख का सृजन करते हैं।

2. साख गुणक का सूत्र:

$$\text{Credit Multiplier} = 1 / \text{CRR (या LRR)}$$

$$\text{कुल साख सृजन} = \text{प्राथमिक जमा} \times (1 / \text{CRR})$$

3. साख सृजन प्रक्रिया (उदाहरण): मान लीजिए प्राथमिक जमा = ₹1,000 तथा नकद आरक्षित अनुपात (CRR) = 10% (0.1)।

- बैंक ₹100 CRR रखकर ₹900 का ऋण देता है।
- यह ₹900 पुनः बैंकिंग प्रणाली में जमा होते हैं। बैंक ₹90 CRR रखकर ₹810 ऋण देता है।
- यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक कुल जमा = $1000 \times (1 / 0.1) = ₹10,000$ न हो जाए।

Q35. IS वक्र (IS Curve) की व्युत्पत्ति (Derivation) एवं इसकी ढलान को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- 1. IS वक्र की परिभाषा:** IS वक्र ब्याज दर (r) और राष्ट्रीय आय (Y) के उन सभी संयोजनों का स्थान-बद्ध (Locus) निरूपण करता है जहां वस्तु बाजार (Goods Market) संतुलन में होता है, अर्थात् जहां नियोजित निवेश नियोजित बचत के बराबर होता है ($I = S$ या $Y = C + I + G$)।
- 2. ऋणात्मक ढलान का कारण:** IS वक्र की ढलान ऊपर से नीचे दाहिनी ओर ऋणात्मक होती है।
 - जब ब्याज दर (r) गिरती है, तो निवेश (I) बढ़ता है।
 - निवेश में वृद्धि से गुणक प्रक्रिया द्वारा राष्ट्रीय आय (Y) बढ़ती है।
- 3. ढलान के निर्धारक:** निवेश की ब्याज-लोचशीलता (Investment Elasticity) तथा गुणक का आकार (MPC)। यदि निवेश अधिक ब्याज-लोचदार है, तो IS वक्र अधिक क्षैतिज / चपटा (Flatter) होगा।

Q36. LM वक्र (LM Curve) की व्युत्पत्ति एवं इसकी धनात्मक ढलान के कारणों का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- 1. LM वक्र की परिभाषा:** LM वक्र ब्याज दर (r) और राष्ट्रीय आय (Y) के उन सभी संयोजनों को दर्शाता है जहां मुद्रा बाजार (Money Market) संतुलन में होता है, अर्थात् जहां मुद्रा की मांग (Liquidity) मुद्रा की पूर्ति के बराबर होती है ($L = M$)।
- 2. धनात्मक ढलान का कारण:** LM वक्र नीचे से ऊपर दाहिनी ओर धनात्मक ढलान वाला होता है।
 - जब राष्ट्रीय आय (Y) बढ़ती है, तो सौदा उद्देश्य हेतु मुद्रा की मांग (L_1) बढ़ जाती है।
 - चूंकि कुल मुद्रा पूर्ति (M) स्थिर है, इसलिए मुद्रा बाजार में संतुलन बनाए रखने के लिए सट्टा मांग (L_3) को घटाना पड़ता है, जो केवल ब्याज दर (r) के बढ़ने पर ही संभव है।
- 3. ढलान के क्षेत्र:** कीन्सवादी क्षेत्र (पूर्णतः क्षैतिज), मध्यवर्ती क्षेत्र (धनात्मक ढलान), और प्रतिष्ठित क्षेत्र (पूर्णतः लंबवत)।

Q37. हिक्स-हैनसन के IS-LM मॉडल में वस्तु एवं मुद्रा बाजार के सामान्य संतुलन (General Equilibrium) का सचित्र विश्लेषण कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- 1. परिचय:** जे.आर. हिक्स और ए. हैनसन ने कीन्सवादी और प्रतिष्ठित सिद्धांतों का समन्वय करके IS-LM मॉडल विकसित किया, जो वस्तु और मुद्रा बाजार के एक साथ संतुलन को स्पष्ट करता है।
- 2. सामान्य संतुलन निर्धारण:**
 - IS वक्र वस्तु बाजार संतुलन को व्यक्त करता है $[I(r) = S(Y)]$ ।
 - LM वक्र मुद्रा बाजार संतुलन को व्यक्त करता है $[L(Y, r) = M_s]$ ।
 - जिस प्रतिच्छेदन बिंदु (E) पर IS वक्र और LM वक्र एक दूसरे को काटते हैं, वहीं साम्य ब्याज दर (r^*) और साम्य आय स्तर (Y^*) एक साथ निर्धारित होते हैं।
- 3. स्वतः समायोजन:** यदि ब्याज दर या आय का स्तर साम्य बिंदु से दूर होता है, तो दोनों बाजारों की शक्तियां उन्हें पुनः संतुलन बिंदु E पर ले आती हैं।

Q38. IS-LM मॉडल के अंतर्गत राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) तथा मौद्रिक नीति (Monetary Policy) की सापेक्ष प्रभावशीलता का विश्लेषण कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- राजकोषीय नीति का प्रभाव:** जब सरकार सरकारी व्यय बढ़ाती है, तो IS वक्र दाहिनी ओर खिसकता है।
 - केस 1 (सामान्य स्थिति):** आय बढ़ती है, परंतु ब्याज दर भी बढ़ जाती है (क्राउडिंग आउट प्रभाव)।
 - केस 2 (तरलता जाल में):** LM वक्र क्षैतिज होता है। राजकोषीय नीति 100% प्रभावी होती है (कोई क्राउडिंग आउट नहीं)।
- मौद्रिक नीति का प्रभाव:** जब केंद्रीय बैंक मुद्रा आपूर्ति बढ़ाता है, तो LM वक्र दाहिनी ओर खिसकता है।
 - ब्याज दर गिरती है और आय बढ़ती है।
 - केस 1 (प्रतिष्ठित क्षेत्र - LM लंबवत):** मौद्रिक नीति पूर्णतः प्रभावी होती है।
 - केस 2 (कीन्सवादी क्षेत्र - तरलता जाल):** मौद्रिक नीति पूर्णतः निष्प्रभावी होती है।

Q39. मिलटन फ्रीडमैन के मुद्रा परिमाण सिद्धांत के पुनर्नियोजन (Restatement of Quantity Theory of Money) की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- परिचय:** 1956 में फ्रीडमैन ने क्लासिकल मुद्रा परिमाण सिद्धांत ($MV = PT$) को 'मुद्रा की मांग के सिद्धांत' के रूप में पुनर्नियोजित किया।
- मूल विचार:** फ्रीडमैन के अनुसार, मुद्रा एक प्रकार की पूंजीगत परिसंपत्ति है जिसे लोग धन (Wealth) रखने के विकल्प के रूप में मांगते हैं।
- मुद्रा मांग फलन:**

$$M_d = f(Y_p, r_b, r_e, dp/dt, w, u)$$

जहां Y_p स्थायी आय/कुल धन है, r_b बॉन्ड पर प्रतिफल दर है, r_e इक्विटी पर प्रतिफल दर है, dp/dt मुद्रास्फीति की प्रत्याशित दर है, w मानव व गैर-मानव धन का अनुपात है, और u उपभोक्ता की रुचियां हैं।

निष्कर्ष: फ्रीडमैन का मानना था कि मुद्रा की मांग का फलन अत्यंत स्थिर (Stable) होता है।

Q40. बामोल-टॉबिन के मुद्रा की नकद मांग के वर्गमूल नियम (Square Root Formula of Transactions Demand for Money) को समझाइए।

विस्तृत उत्तर:

- अवधारणा:** कीन्स ने माना था कि सौदा मांग केवल आय पर निर्भर करती है और ब्याज दर से स्वतंत्र होती है। विलियम बामोल (1952) और जेम्स टॉबिन ने सिद्ध किया कि सौदा मांग भी ब्याज दर से प्रभावित होती है।
- वर्गमूल सूत्र:**

$$M = \sqrt{[b \cdot Y] / (2 \cdot r)}$$

जहां M औसत नकद शेष मांग है, b बॉन्ड को नकद में बदलने की ब्रोकरेज लागत है, Y कुल व्यय/आय है, और r ब्याज दर है।

- निष्कर्ष:** यदि ब्याज दर (r) उच्च है, तो लोग नकद कम रखेंगे और अधिक धन बॉन्ड में रखेंगे। अतः सौदा मांग भी ब्याज दर के विपरीत अनुपात में बदलती है।

Q41. मांग-प्रेरित (Demand-Pull) तथा लागत-प्रेरित (Cost-Push) मुद्रास्फीति के अंतर एवं उनके कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation):

- यह तब उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था में कुल मांग (AD), कुल पूर्ति (AS) की तुलना में अत्यधिक तेजी से बढ़ती है ("too much money chasing too few goods")।
- **मुख्य कारण:** मुद्रा आपूर्ति में अत्यधिक वृद्धि, सरकारी व्यय में वृद्धि, करों में कटौती, या जनसंख्या वृद्धि।

2. लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation):

- यह तब उत्पन्न होती है जब उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण उत्पादक वस्तुओं की आपूर्ति घटा देते हैं या कीमतें बढ़ा देते हैं।
- **मुख्य कारण:** श्रम संघों द्वारा मजदूरी में वृद्धि की मांग (Wage-Push), अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उछाल, या कच्चे माल पर आयात शुल्क वृद्धि।

Q42. स्टैगफ्लेशन (Stagflation) क्या है? इसके मुख्य कारणों एवं इससे निपटने के उपायों का विश्लेषण कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अर्थ: स्टैगफ्लेशन (गतिरोधयुक्त मुद्रास्फीति) दो शब्दों— Stagnation (आर्थिक ठहराव/मंदी) और Inflation (मुद्रास्फीति) — से मिलकर बना है। यह वह स्थिति है जहां अर्थव्यवस्था में उच्च मुद्रास्फीति, उच्च बेरोजगारी और कम/शून्य आर्थिक वृद्धि दर एक साथ विद्यमान होती है।

2. मुख्य कारण:

- **आपूर्ति पक्षीय झटके (Supply Shocks):** जैसे 1970 के दशक में ओपेक (OPEC) द्वारा कच्चे तेल की कीमतों में अचानक भारी वृद्धि करना।
- गलत मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों का संयोजन।

3. समाधान/उपाय: पारंपरिक मांग प्रबंधन नीतियां विफल हो जाती हैं। इसके लिए पूर्ति-पक्षीय अर्थशास्त्र (Supply-Side Economics) की नीतियां जैसे— उत्पादकता बढ़ाना, व्यावसायिक करों को कम करना और संरचनात्मक सुधार लागू करना आवश्यक होता है।

Q43. अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक फिलिप्स वक्र (Phillips Curve) का सचित्र तथा आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. अल्पकालिक फिलिप्स वक्र (Short-Run Phillips Curve - SRPC): 1958 में ए.डब्ल्यू. फिलिप्स ने दर्शाया कि मुद्रास्फीति की दर और बेरोजगारी की दर के बीच एक व्युत्क्रमानुपाती (Trade-off) संबंध होता है। यदि बेरोजगारी घटानी है, तो उच्च मुद्रास्फीति सहनी होगी।

2. दीर्घकालिक फिलिप्स वक्र (Long-Run Phillips Curve - LRPC): मिलटन फ्रीडमैन और एडमंड फेल्ल्स की 'अनुकूली प्रत्याशा परिकल्पना' (Adaptive Expectations) के अनुसार:

- दीर्घकाल में मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच कोई ट्रेड-ऑफ नहीं होता।
- दीर्घकालिक फिलिप्स वक्र बेरोजगारी की प्राकृतिक दर (NRU / NAIRU) पर पूर्णतः लंबवत (Vertical) होता है।
- दीर्घकाल में केवल मुद्रास्फीति बढ़ती है, बेरोजगारी अपनी प्राकृतिक दर पर वापस आ जाती है।

Q44. व्यापार चक्र (Business Cycle) की विभिन्न अवस्थाओं तथा हिक्स एवं सैम्युअल्सन के व्यापार चक्र सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. व्यापार चक्र की 4 अवस्थाएं:

- **विस्तार/समृद्धि (Expansion/Boom):** उत्पादन, रोजगार, आय और कीमतों में निरंतर वृद्धि।
- **प्रतिस्ार (Recession):** आर्थिक गतिविधियों का उच्चतम बिंदु (Peak) से नीचे की ओर गिरना।
- **मंदी/गर्त (Depression/Trough):** आर्थिक गतिविधियों का न्यूनतम निम्न स्तर।
- **पुनरुत्थान (Recovery):** मंदी से बाहर निकलकर अर्थव्यवस्था का पुनः ऊपर उठना।

2. सिद्धांत: सैम्युअल्सन ने गुणक-त्वरक की अंतर-क्रिया (Multiplier-Accelerator Interaction) द्वारा व्यापार चक्रों के उतार-चढ़ाव को समझाया, जबकि हिक्स ने इसे नियंत्रित करने हेतु 'छत' (Ceiling - पूर्ण रोजगार) और 'फर्श' (Floor - स्वायत्त निवेश) की अवधारणाएं दीं।

Q45. केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति के मात्रात्मक (Quantitative) तथा गुणात्मक (Qualitative) उपकरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. मात्रात्मक उपकरण (General/Quantitative Controls): ये संपूर्ण अर्थव्यवस्था में साख की कुल मात्रा को नियंत्रित करते हैं।

- **बैंक दर (Bank Rate) एवं रेपो रेट (Repo Rate):** वह दर जिस पर RBI बैंकों को ऋण देता है। दरें बढ़ाने से साख महंगी और कम हो जाती है।
- **नकद आरक्षित अनुपात (CRR) & वैधानिक तरलता अनुपात (SLR):** बैंकों को अपनी जमाओं का निश्चित प्रतिशत RBI व अपने पास तरल रूप में रखना अनिवार्य होता है।
- **खुले बाजार की क्रियाएं (OMO):** बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री करना।

2. गुणात्मक उपकरण (Selective/Qualitative Controls): ये साख की दिशा और विशिष्ट उपयोग को नियंत्रित करते हैं।

- साख की राशनिंग (Rationing of Credit)।
- मार्जिन आवश्यकताओं में परिवर्तन (Margin Requirements)।
- नैतिक दबाव (Moral Suasion)।

Q46. रेपो रेट, रिवर्स रेपो रेट, एमएसएफ (MSF) तथा बैंक दर में सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. रेपो रेट (Repo Rate): वह अल्पकालिक ब्याज दर है जिस पर वाणिज्यिक बैंक अपनी सरकारी प्रतिभूतियों को बंधक रखकर RBI से 1 से 14 दिनों के लिए ऋण लेते हैं।

2. रिवर्स रेपो रेट (Reverse Repo Rate): वह ब्याज दर है जो RBI वाणिज्यिक बैंकों को अपनी अतिरिक्त तरलता उसके पास जमा करने पर प्रदान करता है।

3. सीमांत स्थायी सुविधा (Marginal Standing Facility - MSF): यह एक अति-अल्पकालिक (रात भर / Overnight) खिड़की है जिसके तहत बैंक आपातकालीन स्थिति में अपने SLR कोटा की प्रतिभूतियों का उपयोग करके उच्च ब्याज दर पर RBI से ऋण ले सकते हैं।

4. बैंक दर (Bank Rate): वह दीर्घकालिक ब्याज दर है जिस पर RBI बिना किसी प्रतिभूति के बैंकों को दीर्घकालिक ऋण या पुनर्वित्त सुविधाएं देता है।

Q47. राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) के मुख्य उद्देश्यों तथा इसके स्वचालित स्टेबलाइजर्स (Automatic Stabilizers) की व्याख्या कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

- 1. राजकोषीय नीति के उद्देश्य:** आर्थिक वृद्धि दर को बढ़ाना, पूर्ण रोजगार प्राप्त करना, मूल्य स्थिरता बनाए रखना, तथा आय व संपत्ति की असमानता को कम करना।
- 2. स्वचालित स्टेबलाइजर्स (Automatic Stabilizers):** ये सरकारी बजट के वे तंत्र हैं जो बिना किसी नए विधायी हस्तक्षेप के स्वतः ही अर्थव्यवस्था के उतार-चढ़ाव को संतुलित करते हैं।
 - **प्रगतिशील आयकर (Progressive Income Tax):** समृद्धि/तेजी के दौरान लोगों की आय बढ़ती है, तो कर दर स्वतः बढ़ जाती है, जिससे मांग नियंत्रित होती है। मंदी में कर संग्रह स्वतः घट जाता है।
 - **बेरोजगारी भत्ता व कल्याणकारी भुगतान:** मंदी के समय बेरोजगारी भत्ता भुगतान स्वतः बढ़ जाता है, जिससे क्रय शक्ति बनी रहती है।

Q48. संतुलित बजट गुणक (Balanced Budget Multiplier) का प्रमेय सिद्ध कीजिए। इसका मान 1 के बराबर क्यों होता है?

विस्तृत उत्तर:

- 1. अवधारणा:** जब सरकार अपने व्यय (G) में जितनी वृद्धि करती है, ठीक उतनी ही राशि करों (T) में वृद्धि करके एकत्र करती है $\Delta G = \Delta T$, तो इसे संतुलित बजट कहते हैं। हावेलमो प्रमेय के अनुसार, संतुलित बजट गुणक का मान हमेशा इकाई (1) के बराबर होता है ($K_{bb} = 1$)।

2. गणितीय व्युत्पत्ति:

- सरकारी व्यय गुणक: $\Delta Y_G = \Delta G \times [1 / (1 - MPC)]$
- कर गुणक: $\Delta Y_T = -\Delta T \times [MPC / (1 - MPC)]$

चूंकि $\Delta G = \Delta T$, कुल आय में परिवर्तन:

$$\Delta Y = \Delta Y_G + \Delta Y_T = \Delta G \times [(1 - MPC) / (1 - MPC)] = \Delta G \times 1$$

निष्कर्ष: संतुलित बजट से भी राष्ट्रीय आय में ठीक उतनी ही वृद्धि होती है जितनी सरकारी व्यय में वृद्धि की गई थी।

Q49. राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) एवं प्राथमिक घाटा (Primary Deficit) के अर्थ एवं महत्व की विवेचना कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. राजस्व घाटा (Revenue Deficit):

राजस्व घाटा = कुल राजस्व व्यय - कुल राजस्व प्राप्तियां

यह दर्शाता है कि सरकार अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों को चलाने के लिए अपनी नियमित आय से अधिक खर्च कर रही है।

2. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit):

राजकोषीय घाटा = कुल व्यय - (कुल प्राप्तियां - उधारियां)

यह सरकार की कुल वित्तीय उधारी आवश्यकताओं (Borrowing Requirements) को दर्शाता है। यह अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति और भविष्य के ऋण बोझ का सूचक है।

3. प्राथमिक घाटा (Primary Deficit):

प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान (Interest Payments)

यह दर्शाता है कि वर्तमान वर्ष की सरकारी नीतियों के कारण सरकार को कितना ऋण लेना पड़ रहा है, इसमें पुराने ऋणों का ब्याज शामिल नहीं होता।

Q50. भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BOP) के चालू खाते (Current Account) तथा पूंजी खाते (Capital Account) का विस्तृत ढांचा समझाइए। BOP में असंतुलन के कारणों का वर्णन कीजिए।

विस्तृत उत्तर:

1. BOP का ढांचा: भुगतान संतुलन एक वित्तीय वर्ष में देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच होने वाले सभी आर्थिक लेन-देन का क्रमबद्ध विवरण है।

- **चालू खाता (Current Account):** इसमें वस्तुओं का निर्यात-आयात (दृश्य व्यापार), सेवाओं का निर्यात-आयात (अदृश्य व्यापार) तथा एकपक्षीय हस्तांतरण (प्रेषित धन/दान) शामिल हैं।
- **पूंजी खाता (Capital Account):** इसमें वित्तीय परिसंपत्तियों का लेन-देन शामिल है जैसे— प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), पोर्टफोलियो निवेश (FII), तथा बाह्य वाणिज्यिक उधारी (ECB)।

2. असंतुलन के मुख्य कारण: विकासशील देशों में आयात में अत्यधिक वृद्धि, निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में कमी, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की उच्च कीमतें, तथा राजनीतिक अस्थिरता या विदेशी पूंजी का पलायन।